आधुनिक शिक्षा में भारतीय शिक्षा प्रणाली का एकीकरण : चुनौतियां एवं आगे की राह

डॉ. रानी शुक्ला
सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य विभाग)
सेठ आर.सी.एस. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
दुर्ग (छ. ग.)

Abatract

प्रस्तावना - भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) भारत की प्राचीन व समृद्ध ज्ञान परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है यह ज्ञान हजारों वर्षों में विकसित हुआ है इसमें भारत की सभ्यता संस्कृति तथा जीवन दर्शन का समावेश है भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) केवल शिक्षा तक सीमित नहीं है इसमें जीवन के हर पहलू मानसिक शारीरिक सामाजिक व अध्यात्म सभी का समावेश है। सामाजिक भेदभाव इत्यादि का समाधान करने तथा देश में सामाजिक एकरूपता आपसी सद्भाव लाने के लिए तो हमें आधुनिक शिक्षा पद्धति को पुनः अध्ययन करना व नए समाज के अनुकूल नए तरीके से कैसे लागू किया जा सकता है| नई शिक्षा नीति उस पर आधारित है | मेक इन इंडिया और डिजिटल इंडिया जैसी योजनाओं को सफल बनाने के लिए विद्यार्थियों में उच्च गुणवत्ता एवं बहुविषक शिक्षा की जानकारी प्रदान करने के दृष्टिकोण से ही नई शिक्षा नीति को लागू किया गया है शोध से पता चलता है स्कूल के विद्यार्थियों के शिक्षा व सामाजिक अनुभव में विरोधाभास है कई जगहों पर शोध से पता चला की कक्षाओं में शिक्षक केवल व्याख्यान विधि का प्रयोग करते हैं जिससे विद्यार्थियों का पूरा विकास संभव नहीं होता इसलिए नई शिक्षा नीति लाई गई है जिससे विद्यार्थियों में रचनात्मक (Creativity), नैतिक मूल्य (Moral value) और कौशल (Skill) को विकसित कर एक नए और विकसित समाज का सपना साकार किया जा सके। भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) में समस्त ज्ञान वेद, उपनिषदों, पुराणों, रामायण, महाभारत, बौद्ध व जैन सभी ग्रन्थों में निहित है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली की अवधारणा :-

आज मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि मुझे "नई शिक्षा नीति और भारतीय ज्ञान प्रणाली" जैसे महत्वपूर्ण विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर प्राप्त हुआ है। वर्तमान समय में जब विश्व तेजी से ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ रहा है, तब शिक्षा की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। इसी संदर्भ में भारत सरकार द्वारा लागू की गई National Education Policy 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में एक ऐतिहासिक परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करती है। लगभग 34 वर्षों के बाद, पूर्व की National Policy on Education 1986 को प्रतिस्थापित करते हुए यह नीति शिक्षा को अधिक समावेशी, बहुविषयी, अनुसंधान उन्मुख तथा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ने का प्रयास करती है।

भारत आज विश्व की सबसे बड़ी शिक्षा प्रणालियों में से एक है। Ministry of Education के आँकड़ों के अनुसार देश में लगभग 15 लाख से अधिक विद्यालय, 26.5 करोड़ से अधिक विद्यार्थी और लगभग 1 करोड़ शिक्षक शिक्षा प्रणाली से जुड़े हुए हैं। इसके अतिरिक्त भारत में 1000 से अधिक विश्वविद्यालय और लगभग 40,000 से अधिक उच्च शिक्षण संस्थान कार्यरत हैं। इन आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि भारत की शिक्षा प्रणाली अत्यंत व्यापक और विविधतापूर्ण है।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय प्रगति देखने को मिली है। भारत में सकल नामांकन अनुपात (Gross Enrollment Ratio) वर्ष 2014–15 में लगभग 24.3 प्रतिशत था, जो वर्ष 2021–22 में बढ़कर लगभग 28.4 प्रतिशत तक पहुँच गया है। नई शिक्षा नीति का लक्ष्य वर्ष 2035 तक इस अनुपात को 50 प्रतिशत तक पहुँचाना है। इसका अर्थ है कि आने वाले वर्षों में लगभग 3.5 करोड़

अतिरिक्त विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। इसके साथ ही सरकार ने शिक्षा पर सार्वजनिक व्यय को सकल घरेलू उत्पाद के लगभग 6 प्रतिशत तक बढ़ाने का लक्ष्य भी निर्धारित किया है।

नई शिक्षा नीति का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य भारतीय शिक्षा को केवल आधुनिक ज्ञान तक सीमित न रखकर उसे भारत की समृद्ध बौद्धिक और सांस्कृतिक परंपराओं से जोड़ना है। इसी संदर्भ में भारतीय ज्ञान प्रणाली की अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली भारत की हजारों वर्षों पुरानी बौद्धिक परंपरा का प्रतिनिधित्व करती है, जिसमें दर्शन, गणित, चिकित्सा, खगोल विज्ञान, भाषा विज्ञान, कला, वास्तुकला, कृषि, पर्यावरण प्रबंधन और आध्यात्मिक चिंतन जैसे अनेक क्षेत्रों का ज्ञान शामिल है।

प्राचीन भारत में शिक्षा केवल सूचना प्राप्त करने का माध्यम नहीं थी, बल्कि यह व्यक्ति के समग्र विकास का साधन मानी जाती थी। इसी कारण भारत में अनेक महान शिक्षण संस्थानों का विकास हुआ। उदाहरण के रूप में Nalanda University प्राचीन भारत का एक अत्यंत प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार यहाँ लगभग 10,000 विद्यार्थी और लगभग 2,000 आचार्य अध्ययन और अध्यापन करते थे। इसी प्रकार Takshashila University भी प्राचीन काल का एक महत्वपूर्ण वैश्विक शिक्षण केंद्र था जहाँ एशिया के विभिन्न क्षेत्रों से विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने आते थे।

भारतीय ज्ञान परंपरा ने विश्व को अनेक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक और बौद्धिक योगदान दिए हैं। महान गणितज्ञ Aryabhata ने खगोल विज्ञान और गणित के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सिद्धांत प्रस्तुत किए। उन्होंने ग्रहों की गति और पृथ्वी के घूर्णन से संबंधित गणनाएँ प्रस्तुत कीं। इसी प्रकार Brahmagupta ने बीजगणित के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया तथा शून्य और ऋणात्मक संख्याओं के प्रयोग को व्यवस्थित किया।

चिकित्सा के क्षेत्र में Ayurveda भारत की एक प्राचीन चिकित्सा प्रणाली है जो आज भी व्यापक रूप से प्रचलित है। यह प्रणाली केवल रोग के उपचार पर ही नहीं बल्कि स्वस्थ जीवन शैली, संतुलित आहार, प्राकृतिक चिकित्सा और रोगों की रोकथाम पर भी विशेष बल देती है। इसी प्रकार योग, ध्यान, नाट्यशास्त्र, भारतीय संगीत, वास्तुशास्त्र तथा पारंपरिक कृषि ज्ञान भी भारतीय ज्ञान प्रणाली के महत्वपूर्ण अंग हैं।

नई शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षा में समाहित करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदमों का प्रस्ताव करती है। सबसे पहले, यह शिक्षा को बहुविषयी और समग्र बनाने पर जोर देती है। पहले की शिक्षा प्रणाली में विषयों को अलग-अलग खंडों में विभाजित कर दिया जाता था, जबकि नई शिक्षा नीति विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों का समन्वित अध्ययन करने का अवसर प्रदान करती है। इससे भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक विज्ञान के बीच बेहतर संबंध स्थापित किया जा सकता है।

नई शिक्षा नीति के अंतर्गत शिक्षा संरचना को 5+3+3+4 मॉडल में पुनर्गठित किया गया है। यह मॉडल प्रारंभिक बचपन से लेकर माध्यमिक स्तर तक विद्यार्थियों के बौद्धिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता और समस्या समाधान की क्षमता का विकास किया जाएगा।

इसके अतिरिक्त नई शिक्षा नीति भारतीय भाषाओं को भी विशेष महत्व देती है। नीति के अनुसार प्राथमिक स्तर पर बच्चों को मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा देने पर जोर दिया गया है। अनेक शैक्षिक अध्ययनों से यह सिद्ध हुआ है कि बच्चे अपनी मातृभाषा में पढ़ाई करने पर अवधारणाओं को अधिक अच्छी तरह समझ पाते हैं। भारत की भाषाई विविधता को देखते हुए यह पहल अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत में लगभग 19,500 से अधिक भाषाएँ और बोलियाँ प्रचलित हैं, जिनका संरक्षण शिक्षा के माध्यम से ही संभव है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली के अध्ययन और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए कई संस्थागत प्रयास भी किए गए हैं। उदाहरण के लिए Indian Knowledge Systems Division की स्थापना All India Council for Technical Education के अंतर्गत की गई है। इस पहल का उद्देश्य तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा को शामिल करना है। इसके माध्यम से विभिन्न विश्वविद्यालयों में भारतीय ज्ञान प्रणाली से संबंधित पाठ्यक्रम, शोध परियोजनाएँ और प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारंभ किए जा रहे हैं।

वर्तमान समय में जब विश्व जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण प्रदूषण और संसाधनों की कमी जैसी समस्याओं का सामना कर रहा है, तब भारतीय ज्ञान प्रणाली के सिद्धांत अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। भारत की पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ, जल संरक्षण प्रणालियाँ और सामुदायिक जीवन शैली सतत विकास के सिद्धांतों पर आधारित हैं। उदाहरण के रूप में प्राचीन काल में निर्मित तालाब, कुएँ और बावड़ियाँ जल संरक्षण के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इसी प्रकार प्राकृतिक कृषि और जैविक खेती पर्यावरण के अनुकूल कृषि पद्धतियाँ हैं।

अंततः यह कहा जा सकता है कि National Education Policy 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली को एक नई दिशा प्रदान करती है। यह नीति आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान और भारत की समृद्ध सांस्कृतिक तथा बौद्धिक परंपराओं के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है। यदि इस नीति का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाता है, तो भारत न केवल शिक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन सकता है बल्कि विश्व स्तर पर एक महत्वपूर्ण ज्ञान केंद्र के रूप में भी उभर सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख उद्देश्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य भारत की शिक्षा प्रणाली को अधिक समावेशी, लचीला और बहुविषयक बनाना है। इसके प्रमुख उद्देश्यों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना, शोध और नवाचार को बढ़ावा देना तथा छात्रों में रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच विकसित करना शामिल है।

NEP 2020 यह भी स्वीकार करती है कि शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम नहीं बल्कि व्यक्तित्व निर्माण और समाज के विकास का साधन है। इसी कारण नीति में भारतीय मूल्यों, परंपराओं और भाषाओं को शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाने पर जोर दिया गया है।

NEP 2020 में IKS की भूमिका

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर समाहित करने का प्रयास किया गया है। इसके अंतर्गत कई महत्वपूर्ण पहलें प्रस्तावित की गई हैं।

1. पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान का समावेश - नीति के अनुसार विद्यालय और उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित विषयों को शामिल किया जाएगा। उदाहरण के लिए योग, आयुर्वेद, भारतीय गणित, दर्शन और साहित्य जैसे विषयों का अध्ययन छात्रों को भारत की बौद्धिक विरासत से परिचित कराएगा।

2. बहुविषयक शिक्षा को बढ़ावा - NEP 2020 बहुविषयक शिक्षा पर जोर देती है। इसका अर्थ है कि छात्र विज्ञान, कला, सामाजिक विज्ञान और भारतीय ज्ञान परंपरा जैसे विभिन्न क्षेत्रों का एक साथ अध्ययन कर सकेंगे। इससे ज्ञान का व्यापक दृष्टिकोण विकसित होगा।

3. स्थानीय और स्वदेशी ज्ञान का संरक्षण - भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक प्रकार का स्थानीय और पारंपरिक ज्ञान मौजूद है, जैसे पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ, लोक चिकित्सा, हस्तशिल्प और लोक कला। NEP 2020 इन ज्ञान प्रणालियों के संरक्षण और अध्ययन को बढ़ावा देती है ताकि वे आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित रह सकें।

4. अनुसंधान और नवाचार - नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित अनुसंधान को प्रोत्साहित करने का प्रावधान है। विभिन्न विश्वविद्यालयों और संस्थानों में IKS से संबंधित शोध केंद्र स्थापित किए जा रहे हैं। इससे पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने और विकसित करने का अवसर मिलेगा।

5. शिक्षक प्रशिक्षण - शिक्षकों को भारतीय ज्ञान परंपरा से परिचित कराने के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता है। NEP 2020 इस दिशा में शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों को मजबूत बनाने पर जोर देती है ताकि शिक्षक छात्रों को भारतीय दृष्टिकोण से शिक्षा प्रदान कर सकें।

IKS के प्रमुख क्षेत्र –विषय शामिल है

1 गणित में शून्य, दशमलव प्रणाली वह बीजगणित भारत की महत्वपूर्ण देन है।
2 खगोल विज्ञान में ग्रहों की गति, समय गणना व पंचांग का विकास हुआ।
3 दर्शन में कर्म, धर्म, पुनर्जन्म व मोक्ष की अवधारणा दी गई है।
4 कला व संस्कृति में संगीत, नृत्य, चित्रकला व वास्तुकला का विशेष योगदान है।
5 पर्यावरण संरक्षण व प्रकृति के साथ सामंजस्य भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) की प्रमुख विशेषता है।

IKS के संभावित लाभ

भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा में शामिल करने से कई प्रकार के लाभ हो सकते हैं। सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह है कि इससे छात्रों में अपनी संस्कृति और इतिहास के प्रति गर्व की भावना विकसित होगी। इसके अलावा IKS नैतिक मूल्यों, पर्यावरणीय जागरूकता और सामाजिक जिम्मेदारी को भी बढ़ावा देती है।

IKS का अध्ययन छात्रों को समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है, जिसमें बौद्धिक विकास के साथ-साथ मानसिक और आध्यात्मिक विकास भी शामिल है। इससे शिक्षा अधिक मानवीय और संतुलित बन सकती है।

चुनौतियाँ

हालांकि NEP 2020 में IKS को शामिल करने का प्रयास सराहनीय है, लेकिन इसके कार्यान्वयन में कुछ चुनौतियाँ भी सामने आती हैं।

सबसे बड़ी चुनौती उपयुक्त पाठ्य सामग्री और प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी है। इसके अलावा कई संस्थानों में पारंपरिक ज्ञान को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने की आवश्यकता है।

दूसरी चुनौती यह है कि शिक्षा प्रणाली में आधुनिक विज्ञान और पारंपरिक ज्ञान के बीच संतुलन स्थापित किया जाए। इसके लिए सुविचारित पाठ्यक्रम और शोध की आवश्यकता है।

निष्कर्ष - अंततः यह कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) भारत कि अमूल्य धरोहर हैं यह न केवल अतीत की पहचान है बल्कि वर्तमान व भविष्य के लिए मार्गदर्शक है इस ज्ञान को हमें समझना, संरक्षित करना व अपनाना चाहिए जिससे मानवता का सर्वांगीण विकास संभव हो सके।

संदर्भ (References)

1. भारत सरकार. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली.

2. Kapil Kapoor. (2019). Indian Knowledge Systems: Nature and Relevance. New Delhi.

3. Radhakrishnan, S. (2008). Indian Philosophy. Oxford University Press.

4. Sharma, R. N. (2018). Indian Education System and Philosophy. Atlantic Publishers.

5. Ministry of Education. (2021). Promotion of Indian Knowledge Systems in Education